THE WORLD BANK

SCERT पटना द्वारा विकसित एक मासिक पत्र

e-संवाद

January 2019 Vol. 01 No. 09

विषय सूची

1। अपनी बात
2। अब तक की गई चर्चा
3। क्या शिक्षक एक पेशेवर है?
4। कक्षा के भीतर प्रबंधन
5। आपने साझा किया
6। अंग्रेजी सिखाएँ
7। अपने विचार दें

शैक्षिक विचार

एक अच्छे शिक्षक का यह गुण होता है कि वह हमेशा अपने विद्यार्थी को आशा की तरफ प्रेरित करे, कल्पना शक्ति रुपी दीए को मन में प्रज्वल्लित करे और सीखने की ललक को पैदा करे।

– अज्ञात

अपनी बात

प्रिय शिक्षक साथियों,

e संवाद के नए अंक के साथ पुनः आपके समक्ष उपस्थित हूँ। आप सबों ने e संवाद की प्रशंसा मुक्त कंठ से की है। आप मे से कईयों ने व्यक्तिगत एवं अन्य संचार के आधुनिक माध्यमों से भी इसकी उपयोगिता बताई हैं।

पिछले तीन अंकों से हमने भाषा की प्रकृति, लिखने पढ़ने के सहज तरीके पर बात की है। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए, पिछले अंक में हम 'भाषा और बोली' पर चर्चा की है। इस अंक में हम क्या शिक्षक पेशेवर है पर चर्चा की है। कारण है कि आम तौर पर शिक्षक और शिक्षण के सन्दर्भ में पेशा पेशेवर इत्यादि शब्दों का प्रयोग उचित नहीं माना जाता। इस लेख में पेशा और पेशेवर शब्दों पर कुछ विद्वानों के मतों को साझा करते हुए इन शब्दों का अर्थ समझने का प्रयास किया गया है। लेख में यह चर्चा भी शामिल है कि पेशेवर तैयारी की आखिर जरूरत क्यों है, पेशेवर तैयारी में क्या–क्या शामिल होता है और यह कैसे शिक्षक को अपनी जिम्मेदारियों को समझने और उन्हें अंजाम देने में मददगार होती है। साथ ही हम कक्षा के भीतर के प्रबंधन पर भी चर्चा की शुरूआत की है। आप सबों ने विद्यालय मे आयोजित चेतना सत्र के कई तस्वीर और विडिओ साझा किया है। हम चाहते हैं आप कक्षा कक्ष के भीतर के बदलाव को भी साझा करें।

इसे विस्तार से समझने और विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की शुरूआत करने हेतु इस अंक में **श्रीमती निमरत खंदपुर, अजीम प्रेम जी विश्वविद्यालय बेंगलुरू के पाठशाला भीतर और बाहर** के जुलाई 2018 में प्रकाशित आलेख '**क्या शिक्षक पेशेवर है'?** को शामिल किया गया है। इसके साथ–साथ अविनाश कुमार, मध्य विद्यालय कोशियावाँ ने **शिक्षकों का सतत क्षमता विकास के मायने क्या और कैसे? और** गगन कुमार, ि◌ाक्षक, उमवि मोरदीवा, समस्तीपुर ने e संवाद के उपयोग करने के तरीके और अपने विचार को साझा किया है, उसे भी आपसे साझा कर रहा हूँ। साथ ही हर अंक की तरह अंग्रजी के Rhyme भी शामिल हैं।

आपके विचार और सुझाव की प्रतीक्षा रहेगी।

सधन्यवाद।

अब तक की गई चर्चा

पिछले तीन अंकों से हमने भाषा की प्रकृति, लिखने पढ़ने के सहज तरीके पर बात की थी। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए, पिछले अंक में हम 'भाषा और बोली' पर चर्चा की है।

क्या शिक्षक एक पेशेवर है ?

निमरत खंदपुर

आम तौर पर शिक्षक और शिक्षण के सन्दर्भ में पेशा पेशेवर इत्यादि शब्दों का प्रयोग उचित नहीं माना जाता। इस लेख में पेशा और पेशेवर शब्दों पर कुछ विद्वानों के मतों को साझा करते हुए इन शब्दों का अर्थ समझने का प्रयास किया गया है। लेख में यह चर्चा भी शामिल है कि पेशेवर तैयारी की आखिर जरूरत क्यों है, पेशेवर तैयारी में क्या–क्या शामिल होता है और यह कैसे शिक्षक को अपनी जिम्मेदारियों को समझने और उन्हें अंजाम देने में मददगार होती है।

शिक्षक–शिक्षकों की कार्यशालाओं में अक्सर राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009 पर चर्चा होती है। चर्चा के दौरान, प्रतिभागियों का ध्यान दस्तावेज के उपशीर्षक पर लाया जाता है। यह उपशीर्षक दस्तावेज के उद्देश्य को संक्षिप्त में प्रस्तुत करता है– पेशेवर और मानवीय शिक्षकों की तैयारी की ओर।

मेरा अनुभव रहा है कि मानवीय शब्द को ले कर सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ मिलती है। परन्तु पेशा (प्रोफेशन) शब्द पर प्रतिक्रियाएँ नकारात्मक ही नहीं, अक्सर आक्रामक भी होती है। कुछ प्रतिभागी यह चिन्ता रखते हैं कि शिक्षक तो गुरू होता है– एक गुरू पेशेवर (प्रोफेशनल) कैसे हो सकता है? यह चिन्ता भी रखी जाती है कि एक पेशेवर तो वेतन के लिए काम करता है – एक शिक्षक अगर केवल वेतन के लिए काम करेगा तो उसकी सोच और उसके कार्य का दायरा बहुत सीमित हो जाएगा।

कुछ प्रतिभागियों का यह कहना होता है कि जब से शिक्षक एक पेशेवर के रूप में देखा जाने लगा है, तब से उसकी समाज में प्रतिष्ठा कम हो गई है। तो प्रश्न यह उठता है कि यह शब्द इतना महत्वपूर्ण

Phpto Courtesy: Teacher of Bihar

क्यों है कि इसका स्थान पाठ्यचर्या की रूपरेखा के उपशीर्षक में चिह्नित किया गया है? इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले, जरूरी है कि इस शब्द को समझने का प्रयत्न किया जाए।

पेशेवर शब्द का तात्पर्य

पेशे को परिभाषित करते हुए एरिक होईल (1982) कुछ मानक प्रस्तुत करते हैं :

- पेशा एक ऐसा कार्य है जो महत्त्वपूर्ण सामाजिक लक्ष्य पूरे करता है। इस कार्य को करने के लिए खास दर्जे की निपुणता की आवश्यकता होती है।
- यह कार्य करते समय नई–नई परिस्थितियाँ निर्मित हो सकती हैं जिनका इन निपुणताओं की मदद से सामना करना पड़ सकता है।
- अत : अनुभव से प्राप्त ज्ञान या निश्चित गुर पर्याप्त नहीं होता, एक संगठित एवं व्यवस्थित ज्ञान की मदद से समाधान निकालने पड़ते है।
- इस ज्ञान और कौशलों को हासिल करने के लिए एक लम्बे अरसे की उच्च शिक्षा की जरूरत है।
- इस तैयारी के दौरान पेशेवराना मूल्यों में समाजीकरण भी शामिल है।
- 'ग्राहक' के प्रति प्रतिबद्धता इन मूल्यों में अहम है।
- क्योंकि व्यावसायिक ज्ञान हर स्थिति के लिए समान रूप से उपयोग में नहीं लाया जा सकता, इसलिए पेशेवर के लिए स्वायत्तता और निर्णय लेने की स्वतंत्रता अनिवार्य है।
- क्योंकि पेशे की जिम्मेदारियाँ इतनी विशिष्ट हैं, इसलिए इस पेशे से सम्बन्धित नीति निर्धारण में पेशे के सदस्यों की भागीदारी और निर्णय लेने का अधिकार और शासन से स्वायत्तता आवश्यक है।
- तैयारी की लम्बी अवधि, जिम्मेदारी और 'ग्राहक' के प्रति गहन प्रतिबद्धता का परिणाम उच्च प्रतिष्ठा और उपयुक्त वेतन है।

> "शिक्षकों के साथ एक कार्यशाला के दौरान लम्बी चर्चा छिड़ी। प्रश्न यह था कि शिक्षकों के सन्दर्भ में पेशेवर शब्द का उपयोग उचित है या नहीं। कुछ शिक्षकों को इस शब्द से आपत्ति नहीं थी। उनका कहना था कि निजी और पेशेवर जिन्दगी अलग–अलग होती है। इसलिए दोनों में भेद करने की आवश्यकता हैं। तथापि, यह भी विचार रखा गया कि पेशेवराना मूल्य व्यक्तिगत मूल्यों पर ही आधारित होते हैं। अत : दोनों मे भेद करना आवश्यक नहीं है। इस पर शिक्षकों ने यह तर्क रखा कि वे केवल शिक्षक नहीं, साधारण इंसान भी हैं। अत : निजी और पेशेवराना जीवन में अन्तर करने की आवश्यकता है। आम इन्सान की तरह शिक्षक भी चौक में गोल–गप्पे खाना चाहते है, जीन्स पहनना चाहते है, शिक्षकों ने सवाल उठाया–मेरे लिए मार्गदर्शक सिद्धान्त क्या है? उदाहरण के लिए, बच्चे पूछते है कि आप के नाखून लम्बे हैं तो हमें नाखून काटने को क्यों कहते है? तो क्या शिक्षकों से जिस तरह के व्यवहार की अपेक्षाएँ हैं, वह उनके निजी जीवन में भी लागू होती है? शिक्षकों का कहना था कि इन मुद्दों का समाधान आजकल के भौतिकवादी समाज में आवश्यक है।"

राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009 में व्यवसाय की विशेषताएँ कुछ ऐसे परिभाषित की गई है: 'अकादमिक प्रशिक्षण की पर्याप्त लम्बी अवधि, ज्ञान का एक व्यवस्थित, सुगठित भण्डार जिस पर यह कार्य आधारित है, पर्याप्त समय का औपचारिक और गहन व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं कार्य क्षेत्र में व्यावहारिक अनुभव, और व्यावसायिक नैतिकता के कोड जो सदस्यों को एक बिरादरी में बाँधते हों। (अनूदित, पृष्ठ संख्या 15)

ह्यूज सोकट के विचार साझा करते हुए केम्पबेल (1996) कहती हैं कि व्यवसाय का मुद्दा मूलरूप से सदाचार और नैतिकता का मुद्दा है। स्वभाव तो बदलता नहीं है परन्तु पेशेवर विकास के माध्यम से उस पेशे के प्रति उत्तरदायित्व की समझ विकसित होती है। कौशल, निपुणता और नैतिक अभिकर्तृत्व (एजेंसी) व्यक्ति में ऐसी मानसिक स्थिति उत्पन्न करते हैं कि दूसरों की भलाई अनिवार्य होती है। अतः भेदभाव करने का सवाल ही नहीं उठता। एक नैतिक रूपरेखा के अनुसार वे कार्य करते हैं – यह रूपरेखा पेशेवर तैयारी के दौरान विकसित होती है और हर पेशेवर व्यक्ति इस रूपरेखा के प्रति निष्ठा रखता है।

स्कएर्स (2003) के अनुसार कुछ लोगों का कहना है कि शिक्षण एक पेशा हो ही नहीं सकता। शिक्षण अनेक अध्ययन के क्षेत्रों से लिए गए ज्ञान का मिश्रण

है। वह खुद एक अध्ययन का क्षेत्र है ही नहीं। यही कारण है कि शिक्षकों की आवाज नीति या उच्च स्तर के निर्णयों में पाई ही नहीं जाती। परन्तु स्कएर्स इस राय को शिक्षण के प्रति घटिया सोच समझते हैं। कुछ हद तक वह शिक्षकों को जिम्मेदार ठहराते हैं क्योंकि उन्होंने शिक्षण को केवल विधियों से परिभाषित कर दिया है। स्कएर्स शिक्षण को नई सोच से देखने का प्रस्ताव रखते हैं – शिक्षण अन्य व्यवसायों की तरह किसी उद्देश्य प्राप्ति में सहायक है, शिक्षण संदर्भ आधारित है और शिक्षण प्रक्रियात्मक है।

शिक्षण स्वांतः सुखाय नहीं किया जाता है,बल्कि किसी और के सीखने में सहयोगी होता है और सीखने से जो बदलाव आता है, वह शिक्षण के दायरे से कहीं अधिक है। शिक्षण, स्थिति और शिक्षार्थी के संदर्भ से बदलता है।इसलिए शिक्षकों को आकस्मिक निर्णय लेना पड़ता है। वह तयशुदा तरीकों को अपना नहीं सकते। वह समय और सोच के संदर्भ में भी बदलता है। अतः स्कएर्स शिक्षण को एक पेशे के रूप में देखते है।

उपर की गई चर्चा में जो पहलू निकल कर आए हैं,उनपर एक शिक्षक के संदर्भ में शोध साहित्य और निजी अनुभव के आधार पर आगे की चर्चा की गई है।

पेशेवर शब्द का तात्पर्य – शिक्षक के सन्दर्भ में :–

एक पेशेवर व्यक्ति अपनी अलग पेशेवराना पहचान होती है– एक शिक्षक के कार्य की विशेषताओं पर चिन्तन करने पर कोई संदेह नहीं कि शिक्षक की अनोखी पहचान होती है। साथ ही, एक पेशे में प्रवेश औपचारिक होता है– यह कथन शिक्षक के लिए भी सही है। एक व्यक्ति शिक्षक तभी बन सकता है जब वह कम से कम दो साल शिक्षक शिक्षा के संस्थान में लगा कर, परीक्षा में सफल हो कर, मान्यता प्राप्त डिग्री हासिल करे। साथ ही कुछ कक्षाओं में पढ़ाने के लिए शिक्षक को टीचिंग एलीजबिलिटी टेस्ट (टीइटी) में भी सफलता का प्रदर्शन देना पड़ता है।

शिक्षण के लिए व्यवस्थित ज्ञान की आवश्यकता है। एक शिक्षक के लिए सैद्धान्तिक ज्ञान, विषयवस्तु से सम्बन्धित ज्ञान और पेशेवर ज्ञान अनिवार्य है। विषयवस्तु के गहन ज्ञान होने पर ही एक शिक्षक विभिन्न स्तर के छात्रों को उपयुक्त प्रकार से यह ज्ञान प्रस्तुत कर सकता है। साथ ही, विषयवस्तु का ज्ञान शिक्षक को आत्मविश्वास देता है। यह आत्मविश्वास एक ऐसे शिक्षक का विकास करता है जो छात्रों को स्वयं सीखने की आजादी दे सकता हो। उनके प्रश्नों के उत्तर दे सकता हो और इन प्रश्नों के आधार पर पूर्वनिर्धारित योजना से अलग हट सकता है। यह तभी संभव है जब सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा के दौरान, विद्यार्थी शिक्षकों को असल कक्षाओं में कार्य करने के अवसर दिये जाएँ जिन पर उन्हें चिन्तन करने के लिए प्रोत्साहन के साथ सकारात्मक फीडबैक दिया जाए। साथ ही, अनुभवी शिक्षकों और अपने सहपाठियों की कक्षाओं का अवलोकन कर उनके द्वारा किए जा रह कार्य को समझने व उसका विश्लेषण करने के लिए चर्चा के अवसर उपलब्ध कराये जाएँ।

शिक्षणशास्त्र और शिक्षापद्धति एवं विषयवस्तु की मिली–जुली समझ भी शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया के लिए अनिवार्य है। शिक्षक को न केवल ज्ञान की समझ की जरूरत है परन्तु उसे इस ज्ञान का मन्थन अपने अनुभव के साथ करके एक निजी रूपरेखा को तैयार करना है जो उसके निर्णय और काम को दिशा दे। यह केवल एक सुनियोजित एवं लम्बी अवधि के शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम से मुमकिन है।

एक पेशेवर शिक्षक के लिए व्यवस्थित सुगठित ज्ञान भण्डार की आवश्यकता न केवल शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया है बल्कि अपनी स्वायत्तता बनाने के लिए भी जरूरी है। एक पेशेवर शिक्षक की विशेषताओं में स्वायत्तता और जवाबदेही भी शामिल है।परन्तु, स्वायत्तता और जवाबदेही समझ और अनुभव का परिणाम हैं। अगर एक शिक्षक को अपने कार्यक्षेत्र के हर पहलू–चाहे वह शिक्षण–अधिगम और आकलन सम्बन्धित हो या दूसरी शैक्षिक प्रक्रियाओं से जुड़ा हो, या उसके स्वयं के विकास से जुड़ा हो– की गहरी समझ हो, तो वह निर्णय खुद ले सकता है। अगर शिक्षा के व्यापक लक्ष्यों की समझ हो, तो अपने द्वारा लिए गए हर निर्णय के परिणाम के बारे में चिन्तन करके शिक्षक खुद ही जिम्मेदारी ले सकता है– उसे किसी की निगरानी की जरूरत नहीं होगी।

एक शिक्षक को शिक्षा और उसकी व्यवस्था के विभिन्न दृष्टिकोणों की समझ भी होनी चाहिए। शिक्षा नीति और क्रियान्वयन की समझ होने पर शिक्षक अपने रोज के कार्यो में खास मतलब पा सकता है। जो कार्य उन्हें कठिन या अनुचित लगते हैं, उनके पीछे क्या सोच है यह समझना भी शिक्षक के लिए आवश्यक है। समाज और शिक्षा के अन्तर्सम्बन्ध, शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न भागों में अन्तर्सम्बन्ध एवं इन सब का शिक्षा के इतिहास के साथ जुड़ाव–

यह सब समझना एक शिक्षक के लिए अनिवार्य है। तभी वह अपने रोज के छोटे–छोटे और उद्वेलित करने वाले किस्सों से उठकर अपना कार्य कर सकता है।

पेशे की विशेषताओं में साझी व्यावसायिक नैतिकता भी शामिल हैः वे मूल्य और नियम जिन को आत्मसात कर शिक्षक अपना कार्य करते है। चाहे वह बच्चों से प्यार या समुदाय और उसकी भिन्नताओं के प्रति आदर हो, या अपने विकास के प्रति प्रतिबद्धता हो। व्यवसाइयों की एक बिरादरी सी बन जाती है। जिसमें नैतिक व्यवहार के लिखित या अलिखित नियम से बन जाते है। इस बिरादरी का हर एक सदस्य प्रवीणता की ओर अग्रसर होता है।

आशा है कि पूर्वगामी चर्चा से यह स्पष्ट हो गया होगा कि शिक्षक के पेशेवर विकास की उपयुक्त प्रक्रियाओं से शिक्षक की पेशेवर क्षमताओं का विकास किया जा सकता है। एक प्रश्न जो शिक्षकों के सन्दर्भ में अक्सर पूछा जाता है– क्या शिक्षक पैदा होते है या उन्हें बनाया जा सकता है? इसका उत्तर स्पष्ट है– उपयुक्त प्रक्रियाओं और प्रासंगिक अनुभवों के माध्यम से छात्र–अध्यापकों को एक जिम्मेदार व्यावसायी बनाया जा सकता है।

उपसंहार

पूर्वगामी चर्चा के आधार पर एक पेशेवर शिक्षक के जो गुण उभर कर आते हैं, वे शिक्षक के सशक्तिकरण से सीधा सम्बन्ध रखते हैं– सैद्धान्तिक ज्ञान, विषयवस्तु का ज्ञान और शिक्षणशास्त्र को लेकर कार्य करने के लिए एक व्यवस्थित रूपरेखा। व्यावसायिक ज्ञान में शिक्षक के उत्तरदायित्व, शिक्षा व्यवस्था की समझ, कार्य–क्षेत्र की समझ और शिक्षा और समुदाय के अन्तर्सम्बन्ध की समझ शामिल हैं। इन सब की प्राप्ति के लिए जहां एक ओर एक लंबी अवधि की औपचारिक और गहन शिक्षा की जरूरत है वहीं अनुभव की अहमियत, चिन्तन, स्वायत्तता एवं जवाबदेही भी जरूरी है।

देखा जाए तो, शिक्षक को एक पेशेवर की तरह तैयार करना स्कूल में उनकी रोज की दिनचर्या के लिए अहम है। अपने कार्य करने की योग्यता और नई स्थितियों में शिक्षा की प्रक्रियाओं को पूरा करने के लिए, शिक्षक को एक पेशेवर व्यक्ति के समान गुणों का प्रदर्शन करना होगा। परन्तु शिक्षक एक पेशेवर नहीं बन पाया– एक लम्बे समय की शिक्षा की जगह, ज्यादातर शिक्षक दो साल का 'प्रशिक्षण' पाते है। शिक्षक–शिक्षा नीति एक पेशेवर शिक्षक की बात करती है परन्तु शिक्षक को नीति की नजर से देखा नहीं जाता। शिक्षक की सेवा–शर्तो को देखा जाए या उनका समाज में स्थान देखा जाए दोनो ही उसे पेशेवर के रूप में प्रस्तुत नहीं करते। शिक्षक से अपेक्षा है कि वह समालोचक एवं विवेकशील व्यक्तियों का विकास करे, पर यह कार्य करने की न तो उनकी तैयारी है, न उनके पास ऐसी पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकें हैं जिन के सहयोग से इसे बेहतर तरीके से किया जा सकता है। जिस प्रकार का प्रशिक्षण उन्हें मिला है और जिस हद तक उन्हें अपने निर्णय करने की स्वायत्तता है, चाहते हुए भी शिक्षक खुद को कर्मकाण्डी प्रक्रियाओं से अलग नहीं कर पाते।

शायद यही कारण है कि जब भी शिक्षकों के साथ कार्यशालाओं में ' पेशेवर शिक्षक' की बात होती है, वह उसे वास्तविकता से बहुत अलग पाते है। कई दशकों से शिक्षकों ने अपने आप को इतना लाचार पाया है कि उनकी पेशेवर पहचान गुरू और राष्ट्र–निर्माता से हट कर केवल एक कर्मचारी की बन गई है।

वे एक पेशेवर के विवरण को अपने से बहुत दूर पाते हैं। कोशिश रहती है कि अगर पेशा शब्द पर सहमति नहीं बने तो कम से कम उस पेशे के मानकों पर तो सहमति हो। यह मानक एक ऐसी शिक्षक शिक्षा का मार्गदर्शन करते है जिसमें हमारी कक्षाओं में बदलाव लाने की क्षमता है।

राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009 में शिक्षण के पेशे की तैयारी का विवरण कुछ ऐसे किया गया है– 'शिक्षण एक पेशा है और शिक्षक शिक्षा, शिक्षकों के पेशेवर विकास की प्रक्रिया है। एक व्यक्ति को व्यावसाय के लिए तैयार करना एक कठिन कार्य है जिसमें कई मोर्चो और दृष्टिकोण से कार्यवाही की आवष्यकता है। (अनूदित पृष्ठ, 15) आशा है कि हमारी शिक्षक शिक्षा में बदलाव जल्द आएगा, और हमारे शिक्षक मानवीय और पेशेवर गुणों से सम्पन्न होंगे।

Phpto Courtesy: Teacher of Bihar

कक्षा के भीतर प्रबंधन

आप सबों के विद्यालय की गतिविधि, जो आप विभिन्न माध्यमों से साझा करते हैं, में चेतना सत्र की गतिविधियों की प्रचूरता होती है। आप कक्षा के अंदर भी सीखने के समर्थ वातावरण का निर्माण करते होंगे, उसे भी साझा करें। इसबार हम कक्षा के भीतर के प्रबंधन पर विचार रख रहे है। आप इसमें और भी बहुत जोड़ सकते है।

हम सभी जानते हैं कि किसी भी कक्षा में अलग–अलग पृष्टभूमि, अलग–अलग क्षमता, अलग–अलग तरीके से सीखने वाले बच्चे होते है। इसलिएं किसी भी कक्षा को मूलतः तीन सत्रों में बांटा जाना चाहिए–

- **पूरी कक्षा के साथ कार्य**
- **कक्षा में छोटे छोटे समूह के साथ कार्य**
- **प्रत्येक बच्चे के लिए व्यक्तिगत अभ्यास के अवसर**

पूरी कक्षा के साथ कार्य – शिक्षक द्वारा किसी कक्षा का प्रारंभ पूरी कक्षा के साथ कोई गतिविधि करते हुए की जानी चाहिए। इसके तहत कहानी, कविता, खेल या कुछ प्रश्न पूछकर उसके जबाब देने के अवसर दिया जाना चाहिए। इससे बच्चें को कक्षा में सुनने,समझने, अपने समझ का विस्तार करने और अपनी सृजनात्मकता विकसित करने का अवसर मिलता है। इससे बच्चो को भाषा विकास का भी अवसर मिलता है।

कक्षा में छोटे छोटे समूह के साथ कार्य – प्रत्येक बच्चों का उनकी दक्षता के आधार पर छोटे– छोटे समूहो में बांटकर काम दिए जाने चाहिए। इससे बच्चे एक दूसरे से सहयोग करते हुए सीखते है। शिक्षक आवश्यकतानुसार प्रत्येक समूहों को मदद करें। समूह कार्य का प्रस्तुति भी कराने चाहिए।

प्रत्येक बच्चे के लिए व्यक्तिगत अभ्यास के अवसर – समूह कार्य के बाद बच्चो को व्यक्तिगत अभ्यास के अवसर दें ताकि बच्चे अपने सीखे हुए बातो का अभ्यास कर सकें। शिक्षक भी जान पाएंगें कि कितना कुछ बच्चों द्वारा आत्मसात किया गया है या कहां कठिनाई हो रही है।

इस तरह से बच्चों में कई कौशल जैसे सुनने, अपने बारी का इंतजार करने, अवलोकन, समूह कार्य करने, मदद करने, स्वतंत्र लेखन चिंतन करने स्वयं का मूल्यांकन करने आदि विकसित किए जा सकते है।

Phpto Courtesy: Teacher of Bihar

आपने साझा किया

शिक्षकों का सतत क्षमता विकास के मायने क्या और कैसे?

*किसी भी समाज या राष्ट्र के सशक्तीकरण के लिए शिक्षकों का सशक्त होना नितांत आवश्यक है क्योंकि एक कुशल शिक्षक हीं समाज को नई दिशा और दशा प्रदान कर सकता है।

शिक्षक किसी भी विद्यालय और समुदाय के बीच का आवश्यक कड़ी है जो समुदाय को विद्यालय के नजदीक लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है और जब समुदाय विद्यालय की कार्यप्रणाली में अपनी सार्थक भूमिका निभाना शुरू कर देगा तो विद्यालय की सफलता और उस विद्यालय के बच्चों का भविष्य निश्चित हीं बेहतर होगा।

वर्तमान समय में शिक्षकों की भूमिका सिर्फ विषयवार शिक्षा प्रदान करने की हीं नही है अब शिक्षकों की भूमिका बच्चों के सर्वांगीण विकास एवं साथ हीं साथ सामाजिक विकास में भी अग्रणी भूमिका निभाना है।

अब प्रश्न यह उठता है कि शिक्षक इतना सब कुछ करे कैसे?

ये पूरी तरह शिक्षक के सकारात्मक सोच पर निर्भर करता है जब एक शिक्षक सभी जिम्मेबारियों का बारीकी से अध्ययन करें और उसमें आवश्यक संसाधन जैसे नित नई जानकारियों,तकनीकों ,शैक्षिक शोधों,एवं अन्य आवश्यक कुशलताओं का सही प्रबन्धन करें तो किसी भी शिक्षक का सतत क्षमता विकास संभव है।

आज वर्तमान परिवेश में शिक्षकों के लिए ये नितांत आवश्यक है कि वे निरन्तर स्व–अध्ययन करें और बच्चों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए नियमित रूप से अपडेट रहें क्योंकि एक कुशल और योग्य शिक्षक हीं सही अध्यापन का कार्य कर सकता है।

जहाँ तक मैं अपने चार वर्षों के कार्यों का अध्ययन करूँ तो हम यही पाते हैं कि आप जब भी किसी वर्ग कक्ष में जाते होंगे तो आपके वर्ग कक्ष में विभिन्न स्तर के बच्चे होते होंगे जो मैं अनुभव किया हुँ जहाँ तक मेरे कार्य करने का तरीका है मैं यही मानता हूँ कि हमारा कार्य तब हीं सफल है जब वर्ग का सबसे कमजोर विद्यार्थी भी गुणात्मक शिक्षा ग्रहण करे इसके लिए मैं स्वयं कार्य करने के साथ–साथ अभिभावक से भी सम्पर्क किये जिससे बच्चे की विद्यालय तक नियमित पहुँच सम्भव हो सकी साथ हीं साथ अभिभावक भी बच्चे की शिक्षा में रुचि ले रहे हैं और इसका बहुत हीं सकारात्मक असर ये हुआ कि नियमित हमारे वर्ग कक्ष में बच्चों की बेहतर उपस्थिति बनी हुई है और वे नियमित शिक्षा प्राप्त करने की ओर अग्रसर हैं।इसके लिए हमे बच्चों के बीच नित नई तकनीकों का इस्तेमाल करना पड़ा।

आप नई–नई तकनीकें या नए–नए तरीके तब हीं अपना सकते हैं जब आप उस पर तैयारी करें स्व–अध्ययन करें और निरन्तर प्रयत्नशील रहे कहने का तात्पर्य यह है कि हमे निरन्तर अपना क्षमता विकास करते रहना चाहिए जिससे हमलोग एक कुशल शिक्षक बन पाएँ और समाज को सार्थक दिशा प्रदान कर पाएँ।

अविनाश कुमार
मध्य विद्यालय कोशियावाँ
एकंगरसराय (नालन्दा)

e संवाद का उपयोग

संकुल की बैठक में तथा कई अन्य जगहों पर 'ई संवाद' मासिक पत्र के बारे में शिक्षकों को बताया हूं। जहां भी 'ई संवाद' के बारे में बताया हूं, सभी जगह शिक्षक इसे पसंद कर रहे हैं। चर्चा के दौरान यह बात सामने आयी कि यह सरकारी स्कूल के प्रोत्साहन हेतु अच्छी पहल है।

- ह्वाट्स एप ग्रुप के माध्यम से यह मासिक पत्र सैकड़ों शिक्षकों तक पहुंच रहा है। इसके अलावा दर्जनों शिक्षकों को व्यक्तिगत रूप से 'ई संवाद' के बारे में बताया हूं।
- एनआईओएस द्वारा संचालित डीएलएड कार्यक्रम के कार्यशाला आधारित गतिविधि के समापन समारोह में 'ई संवाद' मासिक पत्र के सभी अंकों की प्रतियों की प्रर्दशनी लगाया जिसे प्रशिक्षुओं ने काफी पसंद किया। उक्त कार्यक्रम में लगभग दो सौ शिक्षक– शिक्षिका शामिल थे जिसमें मैं भी प्रशिक्षु शिक्षक के रूप में शामिल था।

अध्ययन केंद्र – हरदीश नारायण उच्च विद्यालय बेलारी, प्रखंड–उजियारपुर, जिला–समस्तीपुर

- पीडीएफ में तो 'ई संवाद' की पृष्ठ–सज्जा काफी अच्छी है लेकिन प्रिंट निकालने पर गहरे रंग पर छपी लिखावट का प्रिंट बेहतर नहीं होता है। अर्थात पृष्ठ–सज्जा में रंगों के समन्वय में सुधार की आवश्यकता महसूस हो रही है।

गगन कुमार, शिक्षक,
उमवि मोरदीवा,
समस्तीपु

अंग्रेजी सिखाएं

Rhyme और Poem के अंतर को जानें।

Arshad Reza
P S Pachasa, Nalanda

What is Rhyme?

- Rhyme is a poem for children about 3-7years
- It is medium of teaching vocabulary, elementary mathematics, English alphabet, months name, days of the week or several other behavioural etiquettes
- Poems with child friendly music and action make them learn things very fast and that too is a very interesting way
- Most poems are introduced in the nursery classes s it is called nursery rhyme
- In nursery children learn before school days by listening stories, recognizing colours, fruits, vegetables, through various toys and learn behavioural things through observation and most importantly through rhymes and repetition of similar words in two or four sentences
- Accompanied with music and action taught them in groups of children make them learn things In a very positive and easier way

What is a poem?

- A piece of writing which expresses thought or feelings
- Usually includes irony and symbolism
- Usually consists of verses and may or may not rhymes
- Poems written for younger children are more likely to contain rhyming words shorter verses and may me read at a faster pace
- In the words of Wordsworth" Poetry is spontaneous overflow of powerful emotions"
- Poems contains emotions, feelings, ideas, experience
- Human values, social values, beauty and nature are the subject of poem

Round, Round, Round

Round, Round, Round

Play in the ground.

Parents talk slowly

Children make sound.

Feed the little pup

Which you have found.

Take care of its leg

It has a deep wound.

Shafaque Fatma
Primary school Ahmadpur, (Gov.)
Rafiganj, Aurangabad

आपके विचार

आपके अनुभव अमूल्य है। हम चाहते हैं कि आपसे सार्थक संवाद स्थापित हो। इस अंक में हम पुनः पिछले विषय ही आपके समक्ष रख रहे है। आपके विचार आलेख के रूप में अपेक्षित है।

1. शिक्षकों का सतत क्षमता विकास के मायने क्या और कैसे ?
2. कक्षा प्रबंधन और शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएँ

आप अपने संकुल, विद्यालय, बी0 आर0 सी0 में चर्चा भी कर सकते है। चर्चा का समेकन भी हमें प्रेषित कर सकते हैं।

आप अपने विचार अपने समूह के अलावे हमें भी भेज सकते हैं।

e-Mail - esamvaad.scert@gmail.com
WhatsApp - **9973462621**

Implementation Support Agency for SCERT, Bihar

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
महेन्द्रू, पटना, बिहार - 800006